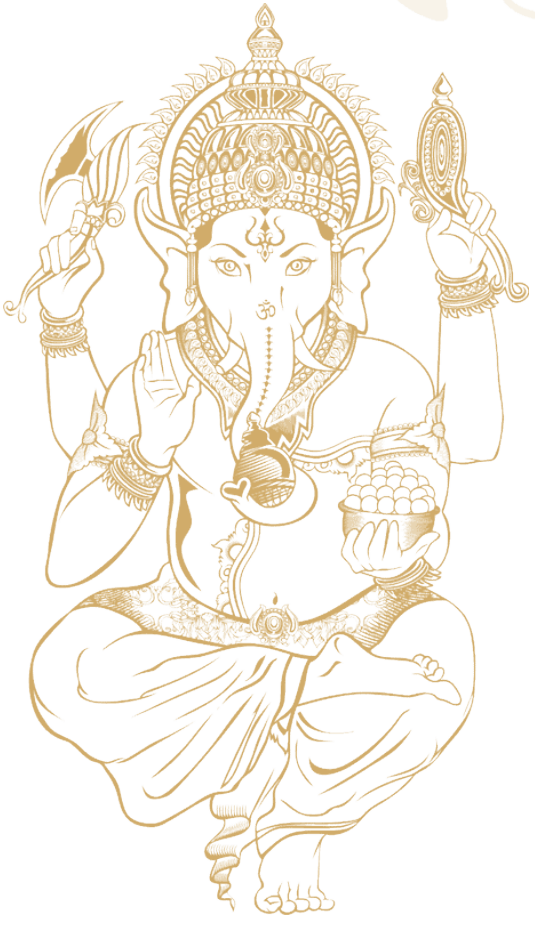

Pt.Dhyanendra. Sharma

21 May 1990

04:30 AM

Gwalior

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119457701

तिथि 21/05/1990 **समय** 04:30:00 **वार** सोमवार **स्थान** Gwalior **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:43:33
अक्षांश 26:12:00 उत्तर **रेखांश** 78:09:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:17:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	20:05:56 घं
वेलान्तर	00:03:28 घं
सूर्योदय	05:29:05 घं
सूर्यास्त	18:59:03 घं
चैत्रादि संवत	2047
शक संवत	1912
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	उ०भाद्रपद
योग	प्रीति
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सिंह
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	ञ--
पाया(रा.-न.)	लौह-लौह
होरा	गुरु
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

शनि 0वर्ष 9मा 6दि

शुक्र

25/02/2015
25/02/2035

शुक्र	27/06/2018
सूर्य	27/06/2019
चन्द्र	25/02/2021
मंगल	27/04/2022
राहु	27/04/2025
गुरु	27/12/2027
शनि	25/02/2031
बुध	26/12/2033
केतु	25/02/2035

योगिनी

भद्रिका 0वर्ष 2मा 12दि

भद्रिका

02/08/2021
03/08/2026

भद्रिका	13/04/2022
उल्का	11/02/2023
सिद्धा	01/02/2024
संकटा	13/03/2025
मंगला	03/05/2025
पिंगला	12/08/2025
धान्या	12/01/2026
भ्रामरी	03/08/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:57:13	मेष	भरणी	2	शुक्र	मंगल	---	0:00			
सूर्य			05:55:42	वृष	कृतिका	3	सूर्य	बुध	शत्रु राशि	1.66	ज्ञाति	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			16:07:39	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	सम राशि	1.27	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			28:39:19	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.63	आत्मा	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			14:45:44	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.30	पुत्र	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			16:51:59	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	शुक्र	शत्रु राशि	1.22	भ्रातृ	धन	मित्र
शुक्र			25:20:29	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	उच्च राशि	1.17	अमात्य	कलत्र	सम्पत
शनि	व		01:24:28	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	स्वराशि	1.64	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		16:23:42	मक	श्रवण	2	चंद्र	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		16:23:42	कर्क	पुष्य	4	शनि	गुरु	मित्र राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

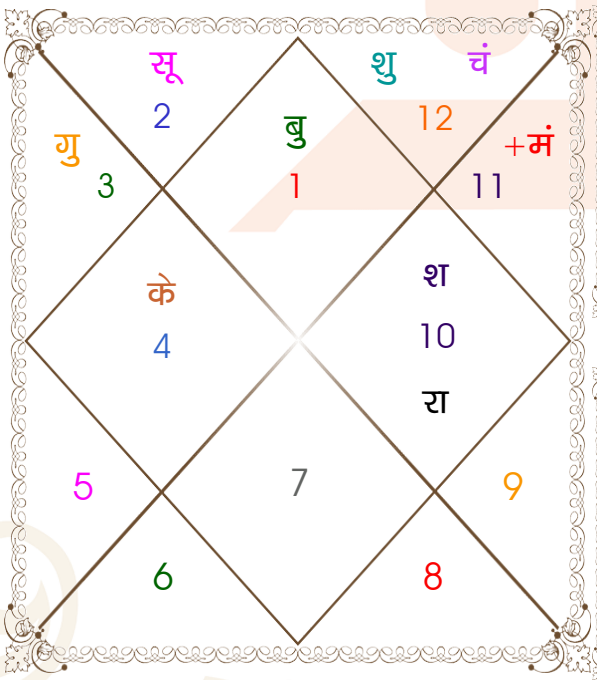

चन्द्र कुंडली

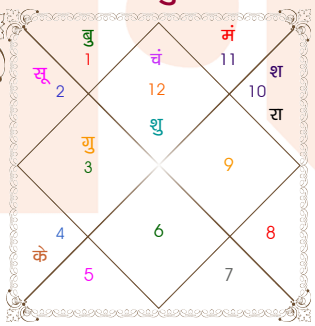

नवमांश कुंडली

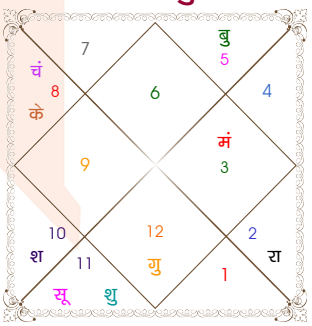

सर्वाष्टकवर्ग

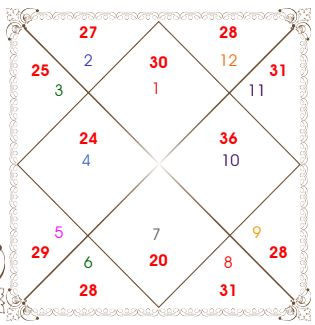

दशमांश कुंडली

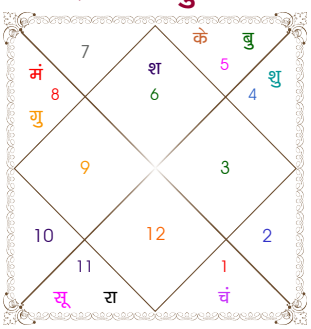

नक्षत्रफल

आप उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण मनुष्य, नाड़ी मध्य, योनि गो तथा वर्ग सिंह होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ज" अक्षर से होगा यथा- जगदीश, जगमोहन आदि।

आप अपने कुल या परिवार के लोगों के मध्य श्रेष्ठ माने जाएंगे तथा सभी कौटुम्बिक जन आपको यथायोग्य स्नेह तथा आदर प्रदान करेंगे। आप मध्यम शारीरिक कद के पुरूष होंगे एवं सत्कार्यों को करने के लिए हमेशा उद्यत रहेंगे। आपके इन कार्यों से अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे एवं आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप धनैश्वर्य से युक्त रहकर एक धनाढ्य पुरूष के रूप में समाज में जाने जाएंगे तथा जीवन में इस धन का सुखपूर्वक उपभोग भी कर सकेंगे। आप में अभिमान का भी भाव रहेगा तथा इसका प्रदर्शन भी आप समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक यशस्वी पुरूष होंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप में सर्वदा सत्वगुणों की प्रधानता रहेगी तथा जीवन में आप पूर्ण रूपेण इनका अनुपालन करने के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार समाज तथा परिवार में अपनी इस भावना का प्रदर्शन करते रहेंगे। धन का आपके पास सामन्यतया अभाव नहीं रहेगा तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके एक विद्वान के रूप में भी आपका मान सम्मान होता रहेगा।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

भाषण देने की कला में आप दक्ष रहेंगे एवं अपने प्रभावपूर्ण वक्तव्यों से सभी लोगों को प्रभावित करने में सफल रहेंगे। आप अधिकांश रूप से सुखसंसाधनों से सम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप विशाल परिवार के स्वामी होंगे तथा जीवन में पुत्र पौत्रादि का सुख प्राप्त करके सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। शत्रुवर्ग को नष्ट करने में आप सक्षम होंगे तथा वे भी आपसे नित्य पराजित तथा भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने की

उनमें शक्ति का सर्वथा अभाव रहेगा। इसके साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा रहेगी एवं इसका नियमानुसार पालन करने में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

समाज में आप अपने सद्गुणों तथा सत्कार्यों से गौरव अर्जित करेंगे एवं एक गौरवशाली पुरूष के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। धर्म के विषय में आप पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान के योग्य समझे जाएंगे। आपमें साहस के भाव की भी प्रबलता रहेगी तथा नित्य साहसिक कार्यों को करने के लिए आप तत्पर रहेंगे अतः आपके साहस तथा शौर्य भाव से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा ललाट विस्तृत होगा। आपकी आखें भी सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। साथ ही नासिका भी उन्नत होगी। आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर, सुडौल तथा पुष्टता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर पतली होगी। शिल्प शास्त्र या चित्रकारी के प्रति आपके मन में स्वाभाविक आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में सफल हो सकेंगी। संगीत के प्रति भी आपका रूझान रहेगा एवं इसका भी आप नियमित रूप से अभ्यास करते रहेंगे। आपके शत्रु आपसे सर्वदा पराजित एवं भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने में प्रायः

असमर्थ ही रहेंगे। आप एक उच्चकोटि के विद्वान भी होंगे तथा विविध शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इसका आचरण करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। स्त्रीवर्ग में भी आप प्रिय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके महिलावर्ग से मधुर एवं मैत्री पूर्ण संबंध भी रहेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होंगी जिसे सुनकर श्रोता तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे एवं प्रसन्न भी रहेंगे। आप अपने जीवन में नाना प्रकार के सुखसंसाधनों से सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप में क्रोध की अल्पता रहेगी तथा राजकीय सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। इसके साथ ही खान से निकाले गए पदार्थो से आप जीवन में वांछित लाभ अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। लेकिन स्त्री से आप हमेशा पराजित रहेंगे एवं अधिकांश सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। समाज में आपके सभी से मधुर संबंध रहेंगे एवं स्वभाव से भी आप अच्छे होंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि की सैर करने में आप अत्यन्त ही इच्छुक रहेंगे तथा इससे आपको पूर्ण मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता की प्रवृति भी आप में रहेगी तथा यथाशक्ति इसका अनुपालन भी करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप समुद्र या जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो तथा मोती, शंखादि रत्नों से युक्त रहेंगे एवं इनमें आपको विशेष लाभ भी होता रहेगा। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी के धन सम्पत्ति की भी आपको प्राप्ति होगी एवं इसका आप आनन्दपूर्वक उपभोग भी करेंगे। इसके साथ ही नारी वस्त्रों के प्रति भी आपके मन में प्रबल अनुराग या आसक्ति भी रहेगी। साथ ही आपका शारीरिक कद भी मध्यम ही रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आपकी जल पीने की इच्छा दिन में कई बार होगी तथा आप इसका उपभोग भी करेंगी। आप एक बुद्धिमती तथा गुणवती स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे एवं सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपका गृहस्थ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप उच्चकोटि के विद्वान भी होंगे एवं कृतज्ञता के भाव से पूर्णरूपेण युक्त रहेंगे तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनका उपकार मानेंगे एवं हृदय से उनके प्रति आभार भी प्रकट करेंगे। इस के साथ ही आपका भाग्य भी प्रबल रहेगा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न हो जाया करेंगे।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक संयमी पुरूष होंगे तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक चतुर तथा बुद्धिमान पुरूष भी होंगे एवं चतुराई तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। जल क्रीड़ा के प्रति भी आप की हार्दिक इच्छा रहेगी एवं इससे आप अत्यन्त ही आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप आजीविकार्जन संबंधी कार्यों में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे तथा यदा कदा लाभ स्त्रोतों में व्यवधान उत्पन्न होने के कारण आर्थिक संकट से भी व्याकुलता का अहसास करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय होगी एवं इसके द्वारा आपके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। साथ ही पिता के द्वारा भी आपको धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जिससा आप जीवन में उपभोग करेंगे। आप में साहस का भाव भी पूर्ण मात्रा में रहेगा तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आपमें सन्तोष के भाव की भी प्रबलता रहेगी तथा जो कुछ भी आपके पास उपलब्ध हो उसमें सन्तुष्टि प्राप्त करके उसी में प्रसन्न रहेंगे इससे आप मानसिक चिन्ता से सुरक्षित रहेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आपका स्वभाव गम्भीर होगा तथा शौर्य गुणों से भी आप युक्त रहेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक मान सम्मान करेंगे। आप में कृपणता की प्रवृति भी रहेगी जिससे यदा कदा अन्य लोगों को परेशानी होगी अतः वे आपसे असन्तुष्ट होंगे। आप अपने परिवार या अन्य कुल में सर्वप्रिय रहेंगे तथा सभी जनों से स्नेह तथा आदर प्राप्त करेंगे। सेवा कार्यों में आप की प्रवृति रहेगी अतः इन कार्यों को आप नित्य करते रहेंगे एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप तीव्रगति से चलने वाले रहेंगे। शनैः शनैः चलना आपको अच्छा नही लगेगा। इसके अतिरिक्त आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा। साथ ही बन्धुवर्ग के आप प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।

नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप एक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा उत्तम गुणों से भी सुशोभित रहेंगे। इसके साथ ही समाज में अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण मधुर संबंध भी रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी देवता तथा ब्राहमणों के प्रति श्रद्धा की भावना रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा एवं इसका आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन भी करेंगे। आप दया एवं करूणा के भाव से भी सर्वदा युक्त रहेंगे एवं दीन दुःखियों के प्रति अपनी इस भावना का पालन करते रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण बलवान होंगे तथा विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में भी दक्षता प्राप्त करेंगे इससे आपको समाज में मान प्रतिष्ठा भी अर्जित होगी। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी तथा परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी आपके द्वारा सुख की अनुभूति होगी।

समाज में आप सदैव माननीय रहेंगे तथा विपुल धनैश्वर्य से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आखें भी बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप निपुण तथा प्रख्यात रहेंगे। इसके अतिरिक्त नगर के सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे तथा आपकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में पैदा होने के कारण आप स्त्रीवर्ग के मध्य अत्यन्त ही लोकप्रिय रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे। आप एक उत्साही पुरूष होंगे एवं अपने समस्त कार्यों को उत्साह से सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। आप में वाक्चातुर्य की प्रधानता रहेगी तथा अपनी तार्किक बातों से सभी जनों को आप आनन्दित करेंगे एवं अपने अधिकांश कार्यों को भी सम्पन्न करेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविक्रयादि अन्य शुभ कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत चन्दन, पीत वस्त्र, पीत वस्त्र, हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।